

# संतोष ही परम सुख : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 10 नवज्ञर, 2010

धन के प्रति राग भाव है तो वह कष्ट पैदा करने वाला होता है। व्यक्ति विशेष के प्रति भी इतना अधिक मोह नहीं होना चाहिए संयोग है तो कभी वियोग भी होने वाला है, किसी व्यक्ति में महत्वाकांक्षा जागती है और उसकी पूर्ति नहीं होती है तो कष्ट उत्पन्न होता है, इसलिए राग के समान कोई अग्नि नहीं है।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय तेरापंथ भवन में उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि संतोष परम् सुख होता है, जिसने संतोष को धारण कर लिया उसे परम सुख की अनुभूति होती है। गृहस्थ के लिए भी आवश्यक है कि वह त्याग, संयम को बढ़ाने का प्रयास करे, राग पर विराग का अंकुश रहना चाहिए। कामनाएं, लालसाएं व्यक्ति को अशांत बनाने वाली होती है जब कामनाएं पूरी नहीं होती है तो दुःख पैदा होता है। इसलिए व्यक्ति को कामनाओं को कम करने का प्रयास करना चाहिए जिससे दुःख भी अपने आप कम हो जाता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि मृत्यु दिनों दिन हर व्यक्ति के निकट आ रही है तो उसे धर्म का संचय करना चाहिए, धर्म को जीवन में अंगीकार करना चाहिए। धन का कभी अहंकार नहीं करना चाहिए धन, प्राण, यौवन चंचल है धर्म ही आदमी को निश्छल बनाने वाला होता है, धन का कभी गलत कार्यों में नियोजन नहीं करना चाहिए।

इस अवसर पर मुनि जितेन्द्र कुमार ने अपने दीक्षा दिवस पर विचार व्यक्त किये, समणी संबोध प्रज्ञा ने गीत के द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त की।

19 नवज्ञर को देशभर में जीवन विज्ञान दिवस मनाया जाता है जिसका पोस्ट जैन विश्व भारती के मंत्री जितेन्द्र नाहटा, विक्रम सेठिया ने आचार्य महाश्रमण को विमोचन हेतु भेंट किया।

छत्तीसगढ़, रायपुर से संघबद्ध उपस्थित छत्तीसगढ़वासियों ने आचार्य महाश्रमण से चातुर्मास हेतु अर्ज की।

इस अवसर पर जैन विश्व भारती के नवनिर्वाचित मंत्री जितेन्द्र नाहटा को चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने मोमेंटो द्वारा सज्जान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

- शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)